Impact Factor : 7.834

गीना देवी शोध संस्थान
द्वारा पटियाला, श्रीगंगानगर व नेपाल से प्रसारित
साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध का अंतर्राष्ट्रीय मासिक

ISSN : 2321-8037
Sepecial Issue, February 2025
Volume 13, Issue 2

Gina Shodh SANGAM

AN INTERNATIONAL MULTI DISCIPLINARY MONTHLY MULTI LANGUAGE
PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 2018)

हिन्दी साहित्य में प्रवासी साहित्यकारों का योगदान

विशेषांक सम्पादक मण्डल :
डॉ. निशा मुरलीधरन
डॉ. डी. जयभारती
मिस रानी परिहार
डॉ. तनु श्रीवास्तव

सम्पादक :
डॉ. रेखा सोनी

प्रधान सम्पादक :
डॉ. नरेश सिहाग

संस्थापक सम्पादिका :
स्मृति शेष
डॉ. विश्वकीर्ति

संगम SANGAM

बहुभाषिक बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTI LANGUAGE PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

www.ginajournal.com

संस्थापक संरक्षक :
स्मृति शेष
श्री हरविन्द्र कमल चौधरी

वर्ष : 13 | अंक : 2 | फरवरी : 2025 (विशेषांक) | आईएसएसएन : 2321-8037

सम्पादक :

डॉ. रेखा सोनी
शिक्षा विभाग, टांटिया वि.वि.,
श्रीगंगानगर – 3 3 5001 (राज.)

प्रधान सम्पादक :

डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट
सचिव, गीना देवी शोध संस्थान,
भिवानी (हरियाणा)

मार्गदर्शन :

डॉ. राजेन्द्र गोदारा
श्रीगंगानगर, राजस्थान।

डॉ. सुरजीत सिंह कस्वां
श्रीगंगानगर, राजस्थान।

डॉ. लक्ष्मी जोशी
त्रिभुवन वि.वि. काठमाण्डू।

इन्जीनियर सृष्टि चौधरी
लेक्चरर, इलेक्ट्रानिक्स
एंड कम्युनिकेशन,
सरकारी पॉलिटेक्निक कॉलेज फॉर
गर्ल्स, पटियाला, पंजाब।

श्री श्रेष्ठ चौधरी,
सीनियर मैनेजर,
स्टेट बैंक ऑफ इंडिया,
साहिबजादा अजित सिंह नगर,
मोहाली, पंजाब।

कानूनी सलाहकार :

डॉ. रामफल दलाल एडवोकेट,
श्रीमती रूपिन्द्र कौर, एडवोकेट

सलाहाकार समिति (Advisory Committee)

डॉ. सुलक्षणा अहलावत
अंग्रेजी प्रवक्ता, शिक्षा विभाग
नूंह (हरियाणा)

डॉ. अरूणा अंचल
बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय,
रोहतक (हरियाणा)

डॉ. सुशीला
चौधरी बंसीलाल विश्वविद्यालय, भिवानी।

डॉ. अल्पना शर्मा
आईएएसई विश्वविद्यालय सरदारशहर

डॉ. विजय महादेव गाडे
बाबा साहेब चितले महाविद्यालय
भिलवडी (महाराष्ट्र)

डॉ. लता एस. पाटिल
राजीव गांधी बीएड कॉलेज
धारवाड़ (कर्नाटक)

डॉ. रीना कुमारी
दशमेश गर्ल्स कॉलेज,
अल्ला बक्श, मुकेरिया, पंजाब।

श्री राकेश शंकर भारती
यूक्रेन।

श्री हेमराज न्यौपाने
नेपाल।

डॉ. ममता तनेजा
अबोहर, पंजाब।

डॉ. प्रियंका खंडेलवाल
बराण, राजस्थान।

डॉ. संदीप
ओम विश्वविद्यालय, हिसार।

प्रो. मधुबाला
राजकीय महिला महाविद्यालय, हिसार।

डॉ. पीयूष कुमार द्विवेदी
जगद्गुरू रामभद्राचार्य दिव्यांग
विश्वविद्यालय, चित्रकूट, उत्तरप्रदेश

डॉ. हवासिंह ढाका
राजकीय महाविद्यालय, हिन्दुमलकोट,
श्रीगंगानगर (राजस्थान)

डॉ. मानसिंह दहिया
संस्कृत प्रवक्ता, शिक्षा विभाग हरियाणा

डॉ. राजेश शर्मा
टांटिया विश्वविद्यालय,
श्रीगंगानगर (राजस्थान)

डॉ. मोहिनी दहिया
माती जीतोजी कन्या महाविद्यालय,
सूरतगढ़ (राजस्थान)

डॉ. मुद्दस्सिर अहमद भट्ट
हिन्दी विभाग,
कश्मीर विश्वविद्यालय श्रीनगर, कश्मीर

डॉ. सीहेच वी. महालक्ष्मी
सीहेच एसडीएसटी थेरेसा महिला
महाविद्यालय, एलुरू, आंध्र प्रदेश

डॉ. मोरवे रोशन के.
यूनाईटिड किंगडम।

डॉ. अनुपमा, पूर्व प्रोफेसर,
अंकारा विश्वविधालय, अंकारा, टर्की

डॉ. आर.के विश्वास
अध्यक्ष होम्योपैथिक, टांटिया, वि.वि.

प्रकाशक, स्वामी एवं मुद्रक **डॉ. नरेश सिहाग,** एडवोकेट ने **मनभावन प्रिन्टर्ज,** पुराना बस स्टैण्ड रोड़, नया बाजार, भिवानी से छपवाकर 202, पुराना हाउफसिंग बोर्ड, भिवानी-127021 (हरियाणा) से जारी किया।

संगम SANGAM

बहुभाषिक बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTI LANGUAGE PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

(Journal of Literature, Arts, Science, Commerece, Culture, Humanities and Social Sciences)

सचिव :

डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट

202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड,

भिवानी-127021 (हरियाणा)

Email : grngobwn@gmail.com

मो. 09466532152

संगम मासिक पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं/लेखों की मौलिकता का दायित्त्व स्वयं रचनाकारों/लेखकों का है। उससे सम्पादक व प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं। किसी भी प्रकार का विवाद होने पर न्यायक्षेत्र केवल भिवानी (हरियाणा) होगा।
सम्पादन और प्रबंध्न के सभी पद पूर्ण रूप से अवैतनिक हैं।

Published by :

Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

202, Old Housing Board,

Bhiwani-127021 (Haryana) INDIA

Email : grsbohal@gmail.com

Facebook.com/bohalshodhmanjusha

Website : www.bohalsm.blogspot.com

WhatsApp : 9466532152

All Right Reserved by Publisher & Editor

Price

Individual/Institutional : 1300/-

Disclaimer :

1. Printing, Editing, Selling and distribution of this Journal is absolutely honorary and non-commercial.
2. All the Cheque/Bank Draft/IPO should be sent in the name of Gugan Ram Educational & Social Welfare Society payable at Bhiwani.
3. Articles in this journal do not reflect the Views or Policies of the Editor's or the Publisher's. Respective authors are responsible for the originally of their views/opinions expressed in their articles.
4. All dispute will be Subject to Bhiwani, Hry. Jurisdication only.

Printed by : Manbhawan Printers, Old Bus Stand Road, Naya Bazar, Bhiwani (Hry.)

Impact Factor : 7.834

ISSN : 2321-8037

Gina Shodh SANGAM

Peer Reviewed & Refereed Research Journal

International Journal of Literature, Arts, Culture, Humanities and Social Sciences

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 2018)

Publisher : Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

तालिका– 2

शैक्षणिक / शोध अंक की गणना हेतु विश्वविद्यालय और महाविद्यालय के शिक्षकों के लिए कार्यप्रणाली

(आकलन शिक्षकों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्यों पर आधारित होना चाहिए, जैसेः प्रकाशनों की प्रति, परियोजना स्वीकृति पत्र, विश्वविद्यालय द्वारा जारी उपयोग तथा पूर्णता प्रमाण पत्र, पेटेंट दर्ज कराने संबंधी अभिस्वीकृति और स्वीकृति पत्र, विद्यार्थियों को पीएचडी उपाधि प्रदान किए जाने संबंधी पत्र इत्यादि।)

क्रम सं.	शैक्षणिक / शोध क्रियाकलाप	विज्ञान / अभियांत्रिकी / कृषि / चिकित्सा / पशु–चिकित्सा विज्ञान संकाय	भाषा / मानविकी / कला / सामाजिक विज्ञान / पुस्तकालय / शिक्षा / शारीरिक शिक्षा / वाणिज्य / प्रबंधन तथा अन्य संबंधित विधाएं
1	समकक्ष व्यक्ति समीक्षित अथवा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा सूचीबद्ध पत्रों में शोध पत्र	08 प्रति पत्र	10 प्रति पत्र
2	प्रकाशन (शोध पत्रों के अतिरिक्त)		
	(क) लिखी गई पुस्तकें, जिन्हें निम्नवत के द्वारा प्रकाशित किया गया :		
	अंतर्राष्ट्रीय प्रकाशक	12	12
	राष्ट्रीय प्रकाशक	10	10
	संपादित पुस्तक में अध्याय	05	05
	अंतर्राष्ट्रीय प्रकाशक द्वारा पुस्तक का संपादक	10	10
	राष्ट्रीय प्रकाशक द्वारा पुस्तक का संपादक	08	08
	(ख) योग्य संकाय द्वारा भारतीय और विदेशी भाषाओं में अनुवाद कार्य		
	अध्याय अथवा शोध पत्र	03	03
	पुस्तक	08	08
3	आईसीटी के माध्यम से शिक्षण ज्ञान– अर्जन, शिक्षण शास्त्र और विषयवस्तु का सृजन तथा नए और नवोन्मेषी पाठ्यक्रमों और पाठ्यचर्या का विकास		
	(क) नवोन्मेषी अध्यापन का विकास	05	05
	(ख) नई पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रमों को तैयार करना	02 प्रति पाठ्यचर्या / पाठ्यक्रम	02 प्रति पाठ्यचर्या / पाठ्यक्रम

202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

www.bohalsm.blogspot.com grsbohal@gmail.com 8708822674 9466532152

अनुक्रमाणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	सम्पादकीय	डॉ. निशा मुरलीधरन	10-11
2.	चित्रा मुद्गल और सुधा ओम ढींगरा की कहानियों में स्त्री लेखन का योगदान	CHEVALIER T.	12-14
3.	हिंदी साहित्य में प्रवासी साहित्यकारों का योगदान	डॉ. अमलपुरे सूर्यकांत विश्वनाथ	15–20
4.	हिन्दी प्रवासी साहित्य की अवधारणा	डॉ० नरसिंह राव कल्याणी	21–23
5.	प्रवासी साहित्यकार के रूप में लक्ष्मी शर्मा का परिचय और उनकी रचनाएँ	सिमरन कोठारी	24–29
6.	भारतीय प्रवासी हिन्दी साहित्य में महिला लेखिकाओं का योगदान	Dr. R. KAVITHA	30-33
7.	सुषम बेदी के साहित्य में प्रवासी नारी संघर्ष	डॉ. आलपाटि भानु प्रसाद	34–36
8.	हिन्दी साहित्य में प्रवासी साहित्यकारों का योगदान	Dr. R. N. Sheela	37-39
9.	अभिमन्यु अनत कृत उपन्यास 'हड़ताल कल होगी' में चित्रित रंगभेद की समस्या	वि. अमुधा, डॉ. अनुराधा पाकलपाटि	40–45
10.	प्रवासी जीवन और साहित्य	डॉ. कविता चौहान	46–51
11.	हिन्दी साहित्य में प्रवासी साहित्यकारों का योगदान	दीपा कुमारी	52–54
12.	प्रवासी जीवन और साहित्य	कविता देवी	55–56
13.	प्रवासी हिन्दी साहित्य – एक विहंगम दृष्टि	डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	57–61
14.	प्रवासी साहित्य : जीवन मूल्यों की टकराहट	डॉ. सरिता चौहान	62–69
15.	अंजना संधीर के प्रवासी हिंदी काव्य में अमरीकी प्रवासी जीवन चित्रण	श्रीमती सविता अधाना	70–76
16.	चित्रा बैनर्जी दिवाकरूणी के उपन्यास ''सीतायम'' : उदात्त मानवी गुणों का ग्रहण	प्रो. एस. प्रसन्ना देवी	77–83
17.	'आओ पेपे घर चलें' उपन्यास के आइलिन की अंतर्वेदना	डॉ. विक्रम बालकृष्ण वारंग	84–87
18.	नीदरलैंड व बेल्जियम में हिन्दी भाषा व भारतीय संस्कृति के प्रति बढ़ती अभिरूचि	डॉ. सतीश कुमार भारद्वाज	88–93

19.	प्रवासी हिन्दी साहित्य की अवधारणा एवं स्वरूप और विशेषताएं	डॉ. पुष्पेन्द्र सिंह	94–98
20.	प्रमुख प्रवासी साहित्यकार और उनके योगदान	रेखा कुमारी	99–104
21.	प्रवासी जीवन और साहित्य	डॉ. सुमित्रा देवी	105–107
22.	रूकोगी नहीं राधिका/स्वयं के साथ अन्याय करती स्त्री पीड़ा की कहानी	डॉ. ममता शर्मा श्रीमती रिंकू शर्मा	108–115
23.	प्रवासी हिन्दी साहित्य में स्त्री लेखन का योगदान	हेमचंद साहू	116–125
24.	हिंदी के प्रवासी कहानियों में बुजुर्गो की व्यथा	जयकला. ए, सुमा. टी. आर	126–128
25.	हिंदी साहित्य में प्रवासी साहित्यकारों का योगदान	गंगा शिवाजी यरोळकर	129–134
26.	हिंदी साहित्य में प्रवासी महिला साहित्यकारों की भूमिका : डॉ. ऋतु शर्मा नंनन पाण्डे के विशेष संदर्भ में	डॉ. ओम ऋषि भारद्वाज	135–139
27.	प्रवासी जीवन और साहित्य	जितेंद्र सिंह दायमा	140–144
28.	प्रवासी लेखिका डॉ. पुष्पा सक्सेना की कहानियों में प्रवासियों की पीड़ा	डॉ. ऋषिकेश श्रीवास्तव	145–152
29.	वैश्विक संदर्भ में हिन्दी प्रवासी साहित्य	कमलेश कुमार वर्मा	153–156
30.	हिंदी साहित्य में प्रवासी साहित्यकारों का योगदान	डॉ. सोनिया दहिया, डॉ. रीना देवी गोरा	157–159
31.	प्रवासी साहित्य में भारतीय संस्कृति और परंपराएँ : एक विस्तृत विश्लेषण	डॉ. सरोज सिंह	160–165
32.	डॉ. राजेन्द्र टोकी के ''अश्'आर और कत'आत'' में सामाजिक यथार्थ	चन्द्र शेखर, डॉ. अरविंदर कौर चुंबर	166–170
33.	वैश्विक संदर्भ में हिंदी प्रवासी साहित्य	सेठी आशा दिनबंधु, डॉ. महेश एम. पटेल	171–173
34.	प्रवासी साहित्य की अवधारणा एवं विशेषताएँ	सागर एस. गेंड़	174–177
35.	मजदूरों की करूण त्रासदी : लाल पसीना (अभिमन्यु अनत)	नंदिनी कुमारी	178–185
36.	सुषम बेदी की प्रमुख कहानियों में स्त्री–वेदना	ज्योति	186–189

37.	'शाम भर बातें' में प्रवासी लोगों के सांस्कृतिक एवं धार्मिक मूल्य	खुशी वशिष्ठ	190–194
38.	ए.बी.सी.डी. उपन्यास में पीढ़ीगत संघर्ष–संस्कृति के संदर्भ में	डॉ. आर. विजयलक्ष्मी	195–196
39.	प्रवासी हिन्दी साहित्यकार उषा प्रियंवदा का योगदान	डॉ. रेनू सिंह	197–199
40.	प्रवासी साहित्य की परिभाषा और विशेषताएँ	Dr. Anupama	200-205
41.	हिंदी के उपन्यासों में प्रवासी नारी का जीवन	डॉ काकानि श्रीकृष्ण	206–208
42.	प्रसिद्ध प्रवासी साहित्यकार और उनके योगदान	डॉ. डी. जयभारती	209–213
43.	हिंदी साहित्य में मॉरिशस के प्रवासी साहित्यकारों का योगदान	डॉ. जया सुभाष बागुल	214–215

SRM
INSTITUTE OF SCIENCE & TECHNOLOGY
VADAPALANI

एस.आर.एम. इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी

(फैक्लटी ऑफ साईस ह्यूमेनिटीज़) वडपलनी (चेन्नई) एवं

गीना देवी शोध संस्थान भिवानी (हरियाणा)

के संयुक्त तत्वावधान में

एक दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी (International Conference)

02 फरवरी 2025 को ऑनलाईन/ऑफलाईन आयोजित की जा रही है।

हिंदी साहित्य में प्रवासी साहित्यकारों का योगदान

उपविषय

1. प्रवासी साहित्य की परिभाषा और विशेषताएँ।
2. प्रवासी हिंदी साहित्य का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य।
3. प्रवासी साहित्यकारों की प्रमुख रचनाएँ।
4. प्रवासी साहित्य में भारतीय संस्कृति और परंपराएँ।
5. प्रवासी जीवन और साहित्य।
6. प्रमुख प्रवासी साहित्यकार और उनके योगदान।
7. प्रवासी हिंदी साहित्य में स्त्री लेखन का योगदान।
8. प्रवासी साहित्य और भाषा।
9. वैश्विक संदर्भ में हिंदी प्रवासी साहित्य।
10. प्रवासी साहित्य पर समकालीन दृष्टिकोण।
11. मीडिया और प्रवासी साहित्य।
12. प्रवासी साहित्य और साहित्यिक पुरस्कार।

इन उप-टॉपिक्स के माध्यम से आप प्रवासी साहित्य पर एक विस्तृत चर्चा कर सकते हैं।

संगोष्ठी में प्रस्तुत शोध आलेखों का प्रकाशन

गीना शोध संगम- अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिका

Peer Reviewed & Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Research Journal & Impact Factor 6.632

के विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जाएगा।

नोट

- आलेख यूनिकोड, मंगल, कृतिदेव फांट में वर्ड फाइल में व पीडीएफ फाइल दोनों रूप में मेल करे।
- हमें पेपर जिस मेल से प्राप्त होगा उसी पर स्वीकृति का मैसेज किया जाएगा।
- राशि जमा कर रसीद या स्क्रीनसॉट मेल और 8269545806 पर भेजना अनिवार्य है तभी पेपर का प्रकाशन सम्भव होगा।
- सहभागिता प्रमाण-पत्र + प्रकाशन सहयोग राशि (केवल पीडीएफ) ₹ 600/- (शोधार्थी/विद्यार्थी)
- सहभागिता प्रमाण-पत्र + प्रकाशन सहयोग राशि (केवल पीडीएफ) ₹ 800/- (प्राध्यापक व अन्य)

आप अपना शोध पेपर/सहयोग राशि का स्क्रीनशॉट मेल आईडी- sodhpatrabohal@gmail.com अवश्य भेजें।

सहयोग राशि/पेपर ईमेल करने की अंतिम तिथि :- 31 जनवरी 2025

गुगल-पे, फोन-पे 8269545806

संयोजक
डॉ. निशा मुरलीधरन
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग
9840274820

सह-संयोजक
डॉ. डी. जयभारती
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग
9843311294

सह-संयोजक
मिस रानी परिहार
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग
8122219425

सहयोगी
डॉ. रीतू शर्मा (ननंन पाण्डे)
अध्यक्ष अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी संगठन, नीदरलैण्ड

सहयोगी
डॉ. तनु श्रीवास्तव
8269545806

आयोजक :
डॉ. नरेश सिहाग
एडवोकेट
8708822674

संगम Impact Factor : 7.834
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक-बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTI LANGUAGE
PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL
SANGAM
Vol. 13, Issue 2
पृष्ठ : 57-61

प्रवासी हिन्दी साहित्य - एक विहंगम दृष्टि

डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन
सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, विस्टास, चेन्नै।

प्रस्तावना: इक्कीसवी सदी के दौरान हिन्दी साहित्य में प्राप्त विभिन्न विमर्शों में, यथा स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श, किसान विमर्श, वृद्ध विमर्श, तृतीय लिंग विमर्श, आदि में प्रवासी विमर्श की अपनी अहम भूमिका है। इसके अंतर्गत रचनात्मक साहित्य अधिक मात्रा में प्राप्त होता है। प्रवासी साहित्य के बारे में जानने से पहले हम यह तय करेंगे कि प्रवासी किसे कहते हैं? प्रवासी साहित्य की विभिन्न परिभाषाएं, स्वरूप, विशेषताएं, हिन्दी साहित्य में उसकी देन, चुनौतियाँ ,प्रमुख साहित्यकार एवं उनकी रचनाएं, आदि की संक्षिप्त जानकारी इस आलेख में प्रस्तुत करने का लघु प्रयास किया गया है।

प्रवासी शब्द का अर्थ: प्रवासी' शब्द संस्कृत के 'प्र' (अर्थात 'दूर') और 'वास' (अर्थात 'निवास') से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है 'दूर निवास' या 'परदेश में निवास करना'। सामान्यतः यह शब्द उन व्यक्तियों को संदर्भित करता है जो अपने मूल देश से बाहर किसी अन्य देश में निवास करते हैं।

प्रवासी शब्द से तात्पर्य वह व्यक्ति जो अपनी नागरिकता के देश से बाहर रहता है। किसी देश के भीतर आंतरिक पुनर्वास या कई महाद्वीपों की यात्रा, हिंसा के खतरे से मजबूर होकर भागना या कहीं और अवसरों की स्वैच्छिक खोज, इसमें एक व्यक्ति या पूरा समूह शामिल हो सकता है। अर्थात सरल शब्दों में प्रवास एक स्थान से दूसरे स्थान पर मानव का आवागमन है। आर्थिक स्थिति सुधारने हेतु स्वेच्छा अथवा विवशता से अपने मूल देश छोड़ने वालों को प्रवासी कहते हैं। अथवा पढ़ाई के लिए वहां जाकर बाद में वही जम जाते हैं उन्हें प्रवासी कहते है।

प्रवासी की श्रेणियाँ : भारत के परिप्रेक्ष्य में प्रवासी लोगों की 3 श्रेणियां बनाई जा सकती हैं।

प्रथम श्रेणी: वे लोग जो गिरमिटिया मजदूरों के रूप में फिजी, मॉरीशस, त्रिनिटेड, गोहाना, दक्षिण अफ्रीका, सूरीनाम, युगांडा, आदि देशों में भेजे गए हैं। यह प्राय: अशिक्षित गरीब लोग होते हैं।

दूसरी श्रेणी: इसमें 80 के दशक में खाड़ी देशों में भेजे गए लोग उपस्थित हैं। यह अशिक्षित अथवा अर्थ शिक्षित, अर्ध कुशल अथवा कुशल मजदूर हैं। अपनी आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाने के लिए यह प्रवासी बनकर वहां गए हैं।

तृतीय श्रेणी: इसमें 80 और 90 के दशक में उच्च शिक्षा अथवा नौकरी के दौरान गए शिक्षित मध्यवर्गीय लोग हैं। इन्होंने बेहतर भौतिक जीवन प्राप्त करने के लिए प्रवास किया है। इन तीन श्रेणियां के द्वारा लिखे गए साहित्य को प्रवासी साहित्य का नामदेय प्राप्त होता है।

प्रवासी साहित्य क्या है? प्रवासी साहित्य प्रवासियों के मूल देश के सामाजिक संदर्भों पर ध्यान केंद्रित करता है जो उन्हें देश छोड़ने के लिए प्रेरित करता है। प्रवास का कोई भी अनुभव साझा करने वाली रचना को प्रवासी साहित्य कहते है। परदेस की सृजनात्मक रचनाओं को पाठकों के सामने प्रस्तुत करनेवाले साहित्य प्रवासी साहित्य है। इसे लिखनेवालों को प्रवासी साहित्यकार कहते हैं। इसमें साहित्य की विभिन्न विधाऐं जैसे कहानी, कविता, निबंध, उपन्यास, संस्मरण आदि उपलब्ध होती है।

विभिन्न शब्दकोशों में प्राप्त प्रवासी साहित्य की परिभाषाएँ निम्नानुसार हैं:

ऑक्सफोर्ड हिंदी-इंग्लिश डिक्शनरी के अनुसार **प्रवासी साहित्य,** वह साहित्य जो किसी व्यक्ति द्वारा उसके मूल देश को छोड़कर दूसरे देश में रहते हुए लिखा गया हो। इसमें उस व्यक्ति के नए वातावरण, संस्कृति और समाज का प्रतिबिंब होता है।

रेख्ता डिक्शनरी के शब्दों में **प्रवासी साहित्य**, विदेश में बसे हिंदी भाषी लेखकों द्वारा लिखी गई रचनाएँ, जो उनके व्यक्तिगत अनुभवों, समाजिक और सांस्कृतिक संघर्षों का चित्रण करती हैं।

हिंदी शब्द सागर के अनुसार **प्रवासी साहित्य**: वह साहित्य जो किसी व्यक्ति द्वारा उसके मूल स्थान को छोड़कर किसी अन्य स्थान पर प्रवास करते समय लिखा गया हो। इसमें लेखक की नई और पुरानी संस्कृतियों का संगम होता है।

भाषा कोश के शब्दों में **प्रवासी साहित्य**: विभिन्न देशों में बसे हिंदीभाषी लेखकों द्वारा रचित साहित्य, जो उनकी जीवन स्थितियों, संघर्षों और अनुभवों का वर्णन करता है।
प्रवासी साहित्य के बारे में विभिन्न विद्वानों के मत:
कमलेश्वर किशोर गोयनका प्रवासी साहित्य के बारे में यू कहते हैं "भारतेतर देश में भारतवंशियों के हिंदी साहित्य ने अपना एक भरा भूरा संसार निर्मित किया है और उसके आकार मात्रा एवं स्तर में निरंतर वृद्धि हो रही है। इस प्रवासी हिंदी साहित्य ने अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है क्योंकि वह अपनी संवेदना, सरोकार, जीवन मूल्य एवं रूप रचना में अपनी अलग विशिष्टता रखता है।"

निर्मल वर्मा कहते हैं "प्रवासी साहित्य केवल सांस्कृतिक बदलावों का संवेदना नहीं है, बल्कि यह हमारी मानवता को नए दृष्टिकोण से देखने का प्रयास है।"
कमलेश्वर के शब्दों में "प्रवासी रचना अपना मानदंड खुद तय करती है इसलिए उसके मानदंड बनाई नहीं जाएंगे।"
राजेंद्र यादव के अनुसार "प्रवासी साहित्य संस्कृतियों के संगम की खूबसूरत कथाएं हैं।"

चित्रा मुद्गल कहती है "प्रवासियों की कहानियाँ केवल संघर्ष की कहानियाँ नहीं होती, बल्कि वे उनके आत्मनिर्माण की कहानियाँ होती हैं।"

फणीश्वरनाथ 'रेणु' के अनुसार "प्रवासी साहित्य एक पुल है, जो हमें हमारे अतीत और वर्तमान के बीच जोड़ता है।"

उपरोक्त परिभाषावों से यह कह सकते हैं कि यह साहित्य नॉस्टेल्जिया, प्रवासी जीवन, उनकी सामाजिक - सांस्कृतिक पहचान हेतु उनके संघर्ष, खोज और अनुभवों को व्यक्त करता है। यह साहित्य भारतीय संस्कृति की जड़ों को बरकरार रखते हुए, विदेशी परिवेश के प्रभाव को भी स्वीकार करता है।

प्रवासी साहित्य का स्वरूप :

1. **भाषिक विविधता:** प्रवासी लेखकों की भाषा में स्थानीय भाषाओं का प्रभाव देखा जाता है, जिससे हिंदी में नए शब्द, मुहावरे, और शैली का समावेश होता है। उदाहरण के लिए, अभिमन्यु अंत की रचनावों में क्रियोल शब्दों का प्रयोग देखनों को मिलता है। यह नई शैली का विकास स्थानीय भाषा के प्रभाव से हुई है।
2. **सांस्कृतिक मिश्रण:** प्रवासी साहित्य भारतीय और विदेशी संस्कृतियों का संगम होता है। इसके फलस्वरूप उत्पन्न नए विचार, दृष्टिकोण, और संवेदनावों की अभिव्यक्ति होती हैं।
3. **विषयवस्तु की विविधता:** प्रवासी लेखकों की रचनाओं में नॉस्टेल्जिया, पहचान की खोज, सांस्कृतिक संघर्ष, और सामाजिक मुद्दों के साथ साथ वे अपने अस्तित्व की तलाश और विभिन्न संस्कृतियों के बीच सामंजस्य की कोशिशों, आदि के स्पष्ट चित्रण प्राप्त होता हैं।
4. **स्थानीयता और वैश्विकता का मिश्रण:** प्रवासी साहित्य में भारतीय संस्कृति के मूल्यों और विदेशी समाज के प्रभाव का मिश्रण देखने को मिलता है। लेखक अपनी जन्मभूमि और कर्म भूमि दोनों के अनुभवों को व्यक्त करते हैं।

प्रवासी हिंदी साहित्य की कुछ प्रमुख विशेषताएँ :

- **संस्कृति और पहचान का संकट:** प्रवासी साहित्य में अक्सर यह समस्या सामने आती है कि वे दो संस्कृतियों, भारतीय और विदेशी , के बीच बंटे होते हैं। इससे उनके जीवन में एक तरह का संस्कृतिक संघर्ष उत्पन्न होता है। वे दोनों संस्कृतियों में सामंजस्य बनाने केलिए निरंतर प्रयासरत हैं, लेकिन कभी-कभी इस संघर्ष के कारण पहचान का संकट जन्म लेता है।
- **सामाजिक असमानताएँ और भेदभाव:** ये साहित्य प्रवासी जीवन की जटिलताओं और प्रवासी समाज की सामाजिक-मानसिक स्थितियों को परिभाषित करता हैं। प्रवासी साहित्य में प्रवासी भारतीयों के द्वारा झेलने वाली सामाजिक असमानताएँ, नस्लवाद और भेदभाव को प्रमुख रूप से दर्शाया गया है। ये लेखकों के अनुभवों से जुड़ी घटनाएँ होती हैं, जो प्रवासी जीवन की सच्चाई को उजागर करती हैं।
- **स्वदेश और प्रवास के बीच द्वंद्व:** प्रवासी साहित्य में नॉस्टेल्जिया (देश की याद) और प्रवासी जीवन के भिन्न अनुभवों के बीच लगातार हो रहे द्वंद्व के साथ तालमेल बैठाने की कोशिश का चित्रण पाया जाता है।
- **भाषा का मिश्रण:** प्रवासी साहित्य में भारतीय भाषाओं के साथ-साथ स्थानीय भाषाओं का भी प्रयोग किया जाता है। यह प्रवासी लेखकों के लेखन को अधिक प्रामाणिक और बनाता है।
- **प्रवासी जीवन की विडंबनाएँ:** इस साहित्य में प्रवासी जीवन की विडंबनाओं को भी चित्रित किया गया है।

यह साहित्य इस पहलू को उजागर करता है कि प्रवासी जीवन हमेशा संघर्षमय होता है, क्योंकि व्यक्ति को दोनों दुनिया में खुद को समायोजित करने में विफल होते हैं।

- **सांस्कृतिक विरासत को बचाने का प्रयास:** प्रवासी साहित्य में अपनी सांस्कृतिक विरासत को बचाने की चाह दिखाई देती है। प्रवासी की रचनाएँ प्रायः भारतीय परंपराओं, रीति-रिवाजों और संस्कृति के संरक्षण के प्रयासों पर केंद्रित होती हैं।
- **प्रेम और रिश्ते:** प्रवासी साहित्य में कई लेखक अपने पात्रों के जरिए परिवार, प्रेम, दोस्ती, रिश्तों और उनकी भावनात्मक यात्राओं, बदलते रूप, आदि को पाठकों के सामने बखूबी प्रस्तुत करते हैं ।

कुल मिलाकर हम यह कह सकते हैं कि प्रवासी भारतीय साहित्यकार अपने भौतिक सामान के साथ-साथ अपने मन की गठरी में अपनी संस्कृति, जीवन मूल्य और परंपराएं बांध के ले जाते हैं। विदेश में बड़े प्रयास से अपनी इस धरोहर की रक्षा, संवर्धन, संयोजन में सतत जुड़े रहते हैं । इन सब की झलक प्रवासियों की रचनाओं में हमें देखने को मिलती है।

प्रवासी साहित्य की कथावस्तु:

- पराया देश में पराए होने की अनुभूति का सटीक चित्रण बयान किया गया है।
- परदेश में उनके प्रति हुए निम्न अथवा द्वितीय नागरिक के तौर पर किए गए व्यवहार, इस दौरान उत्पन्न मानसिक संघर्ष का यथावत चित्रण दर्शाया गया है।
- इस दोहरे व्यवहार के चलते प्रवासियों द्वारा विदेश में अपने अस्तित्व को स्थापित करने का प्रयास इस साहित्य में उपलब्ध है।
- दूसरी अथवा तीसरी पीढ़ी के प्रवासी में, अपनी पहचान, अस्तित्व को लेकर उनकी दुविधा तथा अपनी नई पहचान को निरुपित करने की कोशिश दिखाई देती है।
- प्रवासी देश की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों का यथार्थ चित्रण दर्शाया गया है।
- इस साहित्य में प्रवासी जीवन की विडंबनाओं को भी चित्रित किया जाता है।

प्रवासी हिन्दी साहित्य की देन:

- भारतीय हिन्दी प्रवासियों का साहित्य वैश्विक मंच पर मातृभूमि के विकल्प के रूप में कार्य करता है।
- ऐतिहासिक कालखंड और भौगोलिक क्षेत्र में फैला हुआ है।
- प्रतिनिधित्व के सवालों की पड़ताल करता है।
- विदेशी विश्वविद्यालय में हिंदी पढ़ने एवं पाठ्यक्रम में शामिल करने के लिए विदेश में हिंदी सीखने के सकारात्मक माहौल के निर्माण में अद्वितीय भूमिका निभाती है।

प्रसिद्ध प्रवासी हिन्दी साहित्यकार : अभिमन्यु आनत (मॉरीशस), भीष्म साहनी, राही मासूम रज़ा, निर्मल वर्मा, मुक्ता शंकर, सुरेश कुमार, राजेन्द्र यादव, राम भजन सीताराम, गोविंद माथुर, नरेंद्र कोहली, सुरेंद्र वर्मा, आशीष कश्यप, कुलदीप यादव, राकेश कुमार, तुलसीराम पाण्डेय, गीतांजलि श्री, सूक्ष्मा बेदी, ममता लक्ष्मणा, चित्रा मुद्गल, नवीन कुमार, तेजेंद्र शर्मा,स्नेह ठाकुर, दिव्य माथुर, सुषमा शर्मा, अर्चना राय, जकिया

जुबैरी, अचला शर्मा, आदि प्रतिष्ठित प्रवासी साहित्यकार की भूमिका अत्यंत सराहनीय हैं।

उपसम्हार: प्रवासी साहित्यकारों ने प्रवासी भारतीयों की जीवन शैली, उनके मानसिक तनाव, संघर्ष आदि को अपने साहित्य की अंतर्वस्तु बनाकर उसकी अप्रतिम अभिव्यक्ति प्रकट किया है। इस दौरान उन्होंने हिंदी साहित्य को एक नई पहचान विश्व मंच में प्रदान किया है। प्रवासी अपने परिश्रम से विदेश की जनसंख्या में अपनी उपस्थिति, अस्मिता अथवा पहचान दर्ज करा कर अपनी आवश्यकताओं की आपूर्ति हेतु स्वयं को सशक्त, सक्षम बनाया है। इसके लिए उन्हें विभिन्न प्रकार की यातनावों का सामना करना पड़ा। विदेश में गिरमिटिया बनकर गए उन्हें आर्थिक शारीरिक मानसिक सामाजिक सांस्कृतिक अवहेलना दुख दर्द पीड़ा एवं वेद नाम को झेलना पड़ा उन्हें में से अपना रचना कर्म का सहारा लेकर अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त किया है। परिणाम स्वरुप हमें आज प्रवासी जीवन से जुड़कर उनके अनुभवों को सरलता से समझने का अद्भुत, मनोरंजक, विशिष्ट और मार्मिक अवसर प्राप्त होता है।

संदर्भ :

1. www.aud.delhi.gov.in
2. www. oldror.lbp.world
3. www. garbhanal.com
4. www. shreeprakashan.com
5. www. hindi.webdunia.com
6. www.sharadakshara.blogspot.com
7. www. ijcrt.org
8. www.patrikayan.vishwahindi.com
9. www.shoadhganga.com
10. www. hindi.uok.edu.in
11. https://vaniprakashan.com
12. www.ibp.world.com